HOMEASSIGNMENT

7/7/21 अतिथि तुम कब जाओगे पाठ का सारांश 80 से 100 शब्दों में अपने गृह कार्य कॉपी में लिखिए।

3) लेखक अपने घर में आए अतिथि को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को उनके घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है कि

"तुम कब जाओगे, अतिथि?" लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि वह यहाँ बैठे बिना संकोच के सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है।

लेखक उनके अतिथि के सामने कलैंडर दिखाकर तारीखें बदलते जा रहे हैं, फिर भी चौथे दिन भी अतिथि के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही है, वे यह कहना चाहते हैं कि यह समय अतिथि के वापस जाने का उच्च समय है, क्या उसे उसकी मातृभूमि नहीं पुकारती?

लेखक मन ही मन अतिथि से कहता है कि उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने किसी अनजान डर के धड़क उठा था। उसके बावजूद लेखक और उनकी पत्नी ने अतिथि का स्वागत बड़े प्रेम भाव और सम्मान भाव से किया था।

वे कहते हैं, कि अतिथि को जरूर उनके बनाए हुए स्वादिष्ट खाने के बारे याद होगा, और उसी दिन उन्होंने ये भी सोचा था कि वे दूसरे दिन अतिथि सत्कार से उन्हें विदा करेंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। लेखक ने तो उन्हें भोजन की लंच की गरिमा प्रदान की और रात को अतिथि को सिनेमा भी दिखाया, इसके बाद भी अतिथि घर में रहे, और दूसरे दिन अतिथि धोबी को कपड़े देना चाहे।

इस बात पर लेखक ने कपड़े लॉण्ड्री में देने के लिए कहा, उन्हें शायद अब अतिथि जल्द से जल्द जाना चाहते हैं, कपड़ों का और बिस्तर के चादरों का काम भी यतम हो गया पर वे अभी तक उनके घर में ही थे।

अब वो गप-सप और मुस्कराहट भी कहीं गायब हो गयी थी।

लेखक की पत्नी भी उनसे बार-बार अतिथि के जाने के बारे में पुछती हैं, और लेखक कुछ नहीं कह पाता। अब उन्हें लगता है कि अतिथि को आमंत्रण के बाद पाँचवें सूर्य की किरण लगने पर वे लौट जाने का निर्णय लेंगे, क्योंकि लेखक भी तो मनुष्य हैं।

लेखक कोई अतिथि के तरह देवता नहीं हैं। लेखक कहता है कि एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। लेखक अतिथि को लौट जाने के लिए कहता है और इसमें ही उनका देवत्व सुरक्षित रहेगा, चिढ़कर वे अंत में कहते हैं; उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?